ई–बुलेटिन

कृषिउद्यमी

प्रतीयमान अनुभव को बांटने वाला मंच

खंड –VI अंक –VIII नवंबर–2014

प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि

इस अंक में:

- आई आई टी एफ – 2014, नई दिल्ली में महिला एग्रिप्रेन्यूर
- इस महीने का एग्रिप्रेन्यूर: श्री सूब्रमणि के.के.
- इस महीने का संस्थान एन एस आर आई सी एम कल्याणी, पश्चिमबंगाल
- सुश्री गीताशोरी युमनम, भारत–जापान बिजिनेस वुमेन फोरम में एग्रिप्रेन्यूर

कृषिउद्यमी की मुफ्त हेल्पलाइन का उपयोग करें

1800 -425-1556

" कृषि उद्यमिता एक ऐसा प्रतीयमान मंच है जहां कृषि उद्यमियों, बैंकरों, कृषि व्यवसाय कंपनियों, नोडल प्रशिक्षण संस्थानों, विस्तार कार्यकर्ताओं, शिक्षाशास्त्रियों, अनुसंधानकर्ताओं तथा कृषि व्यवसाय चिंतकों, जो देश में कृषि उद्यमिता विकास के लिए कार्य कर रहे हैं, के अनुभवों को सबके साथ बांटा जाता है।

इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेर– 2014, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में महिला एग्रिप्रेन्यूर

आई आई टी एफ– 14, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में दर्शकों से बातचीत करते हुए महिला एग्रिप्रेन्यूर।

इंडिया इंटरनेशनल ट्रेड फेर–2014 की 34 प्रदर्शनी का प्रारंभ हंसध्वनी थियेटर, प्रगति मैदान, नई दिल्ली में भारत के माननीय राष्ट्रपति जी के द्वारा किया गया। इस वर्ष प्रदर्शनी का विषय "महिला उद्यमी" है जिसे राज्य एवं केंद्रशासित प्रदेशों के पेवीलियनों पर विशेष रूप से प्रदर्शित किया गया था। कृषि उद्यमिता विकास केन्द्र (कैड/सीएडी) मैनेज, हैदराबाद ने प्रदर्शनी में एसीएबीसी योजना के तहत महिला उद्यमियों की सहभागिता को सरल बनाया है। प्रदर्शनी हेतु तीन राज्यों के आठ महिला उद्यमियों को पहचाना गया है। वे हैं – आई सी एम – इंफाल से चाबुंगम मेरी देवी और श्रीमती चिंगांगबम तरुणबाला देवी, सुश्री संगीता सवालाखे जिन्होने कृषि विज्ञान केन्द्र – दुर्गापुर, अमरावती में शिक्षण प्राप्त किया, श्रीमति विजयलक्ष्मी नरसय्या मामिडाला, कृष्णा वैली एडवान्स्ड एग्रिकल्चर फाउन्डेशन (केवीएएएफ)–कन्हन, नागपुर से श्रीमति मंदा निमसे तथा श्रीमति कविता जादव – के वी के बाबलेश्वर, श्रीमति एस. सेलापोन्नु और श्रीमति बी. उमामहेश्वरी बालंटरी एसोसियेशन फर पीपुल सर्वीस (वीएपीएस), मदुराई 14/4/2014 से 27/11/2014 तक विभिन्न विषयों को महिला उद्यमियों ने प्रदर्शित की।

- आईसीएमए, इंफाल के श्रीमति चबुंगबम मेरी देवी और श्रीमति चिनगनबम तरुणवालादेवी ने कोशकीट पालन के महत्व को समझाते हुए कोशकीट हस्तकला तथा रेशम हथकरघा इत्यादी के प्रदर्शित किया था। लगभग 4000 दर्शकों ने कोशकीट पालन पर सूचना प्राप्त किया है।

- श्रीमति संगीता सवालखे तथा श्रीमति विजयलक्ष्मी नरसय्या मामिडाला ने जैवी कृषि तथा जैवी खाद तैयारी, जैवी कीटनाशकों एवं जैवी एजेंटों के महत्व के बारे में समझा है। इस अवधि के दौरान, 20,000 दर्शकों ने इस स्टॉल को देखा।

- केवीके, बाबलेश्वर के श्रीमति मंदा निमसे तथा श्रीमति कविता जादव ने 23,000 दर्शकों को कृषि मशीनीकरण, कृषि निवेश, बट्टु–फसल नर्सरी तथा फल प्रसंस्करण यूनिटों के महत्व को समझाया जिससे ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि उद्यमों को दीर्घकालिक बना सक

- वालंटरी असोसियेशन फर पीपुल सर्वीस (वीएपीएस), मदुराई के श्रीमति एस. सेल्लापोन्नु तथा श्रीमति बी. उमामहेश्वरी ने मीलेट अनाजों तथा मसालों के मूल्य जोड़ उत्पादों को प्रदर्शित किया। लगभग 15,500 दर्शकों ने मूल्य जोड़ तकनीक तथा मृदा की उर्वरता को बढाने के लिए मृदा एवं जल परीक्षण के महत्व को प्रदर्शित किया।

राष्ट्रीय कृषि प्रबंधन विस्तार संस्थान, कृषि तथा सहयोग विभाग, कृषि मंत्रालय राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक

मैक इन इंडिया

कर्नाटक राज्य, मान्ड्या जिला, श्रीरंगापट्ना तालुक के बोम्मूरु अग्रहारा के श्री के.के. सुब्रमणि (53) कहते है कि " यह आश्चर्यजनक विषय है कि साँतवा बड़ा एवं दूसरा अत्यधिक आबादी वाला राज्य होकर भारत लगभग 1 टन के पपीता के बीज तैवानी कंपनी से आयात करता है। इन बीजों का दर रु.3,00,000/– प्रति किलों है। कंपनी जानता है कि किसान उन्हें उगाते है और खाते है। उनके सर्वेक्षण के अधार पर, उन्होंने भारतीय किसानों की रुची को जाना तथा उनके बीजों को बड़े पैमाने पर बेचा। कृषक होने के नाते मैं, इस प्रतिस्पर्धी को चुनौती देने के लिए तैयार हुआ। हम बहुत रकम खो रहे है। अतः मैं एफ–1 लाल बौना पपीता बीज विकसित कर तैयावान पपीता किस्म को प्रति स्थापित करने के लिए मेरे पूरे अनुभव का उपयोग किया।"

श्री के. के. सुब्रमणि पपाया की उन्नत क़िस्म ऍफ़-१ रेड ड्वार्फ का उत्पादन दिखाते हुए

श्री सुब्रमणि सरकारी अनुसंधान केंद्र तथा निजी बीज कंपनियों में 20 साल काम किए थे। तैयवान किस्म की बीजों को प्रतिस्थापित करने की शपथ से उन्होंने नौकरी छोड़ दी और अपने गाँव जाकर वैज्ञानिक खेती प्रारंभ की। उन्होंने पपीता अनुसंधान के लिए दो एकड़ निर्धारित किया है। प्रारंभ में श्री सुब्रमणि को अपने नियमित आय में से राशि निकाल कर नहीं रखने के कारण आर्थिक समस्याओं का सामना करना पड़ा। परंतु अनुसंधान की आरे उनका दृढ़ संकल्प, धैर्य और आशावादिता ने उन्हें एक दिन अपने लक्ष्य प्राप्त करने के विश्वास को बढ़ाया है।

इस मोड़ पर, उन्होंने स्थानीय समाचार पत्र में कृषि उद्यमिता विकास संबंधी विज्ञापन को देखा और कृषि उद्यमियों को समर्थन देने के विषय से आकर्षित हुए। तुरन्त, उन्होंने मेसर्स टेर्रा–फार्मा बयो टेक्नॉलजीस लिमिटेड, बेंगलूर को आवेदन देकर प्रवेश प्राप्त किया है। प्रशिक्षण के दौरान, प्रबंध विशेषज्ञों, बैंकरों, संसाधन व्यक्तियों तथा सफल कृषि उद्यमियों से मिले, वे बाजार सर्वेक्षण परियोजना तैयारी, अभिलेखन, लेखाकरण इत्यादि सीखे उसके बाद उन्होने अपने फर्म को "एग्रि मॉ बायोसइन्सेस" के नाम सं पंजीकृत कराया। कैनरा बैंक, हाई टेक ब्रांच जे सी रोड, बेंगलूरु ने रु. 4.50/- लाख का ऋण दिया तथा नाबार्ड 36 प्रतिशत सब्सिडी प्रदान किया है। उत्साह के साथ उन्होंने अनुसंधान और परामर्शी सेवा को उन्हों वैज्ञानिक अभ्यास पैकेज को कमर्शियल तथा बागवानी फसलों पर प्रारंभ किए है। उन्होंने तैयवान किस्म की पपाया को चुनौती दे सकने योग्य एफ–1 लाल बौना पपीता को विक. सित किया है।

एफ–1 लाल बौना किस्म की विशेषताएं:

पौधे की लंबाई : छः फुट
पैदावार : 25 से 30 टन/हर एकड़
औसतन फल का भार : 1–1.5 किलो ग्रम
टी एस एस : 12 प्रतिशत ब्रिक्स
फल का रंग : नारंगी – पीला
फलने की अवधि : बोने के आठ महीने के बाद और 20 महिने तक चलेगा
पौधे का प्रकार

श्री सुब्रमणि जी कहना है कि उचित उत्पादन प्रक्रियाओं का अनुसार कर हम सीडलेस पपीता भी पा सकते हैं। व्यापारिक स्तर पर श्री सुब्रमणि कई बीज कंपनियों से जुडे है और एफ – 1 लाल बौना पपीते के बीजों को दुगुना बनाने के कॉन्ट्रक्ट पा रहे है। आज "एग्रिमा बयोसाइन्सेस" कृषि के क्षेत्र में वैज्ञानिक तरीके के संपूर्ण समाधान के रूप में जाना जाता है। एग्रिमा बयोसाइन्स का वार्षिक टर्नओवर रु. 90 लाख है और 15 विज्ञान के स्नातक इस फर्म में भर्ती किए गए है। अपने साथी कृषि उद्यमियों को श्री सुब्रमणि जी का संदेश है कि "किसी भी विचार को लीजिए, उसमें पूरी तरह अपने आप को ढाल कर लक्ष्य प्राप्त हाने तक कार्य करते रहिए"

श्री सुब्रमाणि के.के
एग्रि मॉ बायोसीड्स, सि.नं. 69, बोम्मूरु अग्रहारा, श्रीरंगपट्ना तालुक, माण्ड्या, कर्नाटक, अफिस नं. 52, बी सेक्टर, अमृतनगद, बेंगलूरु.
मो.सं. 09448282113, ई–मेलः kalankes1961@yahoo.com

एन एस आर आई सी एम – कल्याणी, पश्चिम – बंगाल द्वारा ए सी ए बी सी प्रशिक्षण के माध्यम से "एग्रिप्रेन्यूर – नेता" तैयार करने के आधुनिक प्रबंधकीय तकनीकों को अपनाना

नेताजी सुभास रीजिनल इन्स्टिट्यूट ऑफ कोऑपरेटिव मैनेजमेंट (एनएसआरआईसीएम), की स्थापना भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा 1 जून, 1956 को ब्लॉक स्तरीय प्रशिक्षण केंद्र के रुप में आधुनिक बंगाल के निर्माता स्वर्गीय डॉ. बी.सी. रॉय के द्वारा स्थापित किया गया था। केंद्र ने सहकारिता निदेशालय के ब्लॉक स्तरीय अधिकारियों के लिए 11 महीने का सामान्य बेसिक कोर्स चलाना प्रारंभ किया जो रिजिस्ट्रार ऑफ कोआपरेटिव सोसाइटीस, पूर्वी तथा उत्तरपूर्वी क्षेत्र द्वारा प्रायोजित किया गया है।

सनद कृषि विद्यार्थियों के लिए ए सी एवं ए सी बी योजना के बारे में जागरूकता अभियान

मिशन

एन एस आर आई सी एम का मिशन पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, अडंमान व निकोबार द्वीप समूह तथा सिक्किम में स्थित सहकारी संगठन, तत्संबंधी विभागों एवं सहकारी विभागों में कार्यरत व्यक्तियों को अपने प्रबंधकीय कौशलों और आधुनिक प्रबंधकीय तकनीकों को अपनाने के माध्यम से सहकारी संस्थाओं के उद्देश्यों को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना है। उपयुक्त नवीन विचारों के सृजन के माध्यम से व्यावसायिक व्यक्तित्व को गढ़ने के द्वारा, नवीन प्रबन्धकीय अभ्यासों तथा नवीन मानकों को स्थापित करने वाले " रिस्क बेरिंग लीडर – मैनेजरों" को तैयार करने के द्वारा सहकारी संस्थाओं में मानव संसाधन के विकास के माध्यम से इसे संपन्न करना है।

विजन

उन्नति हेतु कीट बद्ध नैतिक, विश्वसनीय, उद्योग तथा समाजिक स्तर पर संवेदी लीडर–मैनेजर का विकास तथा ज्ञान की नयी सीमाओं का सृजन कर सहकारी संगठनों तथा सहकारी विभागों में प्रबंधकीय अभ्यासों को तैयार करने वाले गौरवशाली संस्थान के रुप में स्थापित होना है।

ए सी ए बी सी योजना के क्रियान्वयन हेतु मैनेज के साथ सहचर्य

मैनेज – प्रायोजित ए सी ए बी सी कार्यक्रम को यह संस्थान 2002 से आयोजित कर रहा है। पहले चरण में, संस्थान ने पाँच प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाया है और 140 प्रतिभागियों को प्रशिक्षित किया है, जिनमें से 14 ने एग्रिक्लिनिक्स, एग्रिबिजिनेस केन्द्र, बकरी पालन, कुक्कुट पालन, जैवी–खाद्य यूनिट, एग्रि–परामर्शी सेवा जैसे क्षेत्रों में सफल रूप से अपने एग्रि वेन्चर स्थापित किया हैं। दूसरे चरण में ए सी ए बी सी प्रशिक्षण का दूसरा चरण 2014 में प्रारंभ हुआ है। प्रशिक्षण का एक बैच समाप्त हुआ और 19 एग्रिप्रेन्यूर शिक्षण प्राप्त किया है।

ए सी ए बी सी योजना को बढ़ावा देने हेतु संस्थान द्वारा अपनाए गए उत्तम अभ्यास

- ए सी ए बी सी योजना के क्रियान्वयन को सुदृढ़ बनाने के लिए बैंकरों, नाबार्ड तथा अन्य स्टेकहोलडरों के लिए कार्यशालाएं आयोजित करना।
- एग्रिबिजिनेस केन्द्र प्रारंभ करने के लिए बिजिनेस लाइसेन्स प्राप्त करने तथा नए व्यापार प्रारंभ करने हेतु प्रक्रियात्मक औपचारिकताओं को पूरा करने में एग्रि प्रेन्यूरों को नियमित रुप से समर्थन देना।
- के वी के विशेषज्ञों की मध्यस्तता के साथ एग्रिप्रेन्यूरों की उन्नति तथा समस्याओं पर विचार–विमर्श करने एवं एग्रिप्रेन्यूरों के समूह बनाने को प्रोत्साहित करने के लिए मासिक बैठकों को आयोजित करना है।
- पुस्तकों एवं अन्य प्रकाशनों हेतु पुस्तकालय की स्थापना करना।
- ए सी ए बी सी निर्देश सूत्र, शिक्षण सामग्री, नाबार्ड प्रायोजित योजनाओं पर सूचना, एन एच एम, आत्मा, स्थापित एग्रिवेन्चरों की सफल कहानियाँ, परियोजनाएं इत्यादि सहित डी वी डी को प्रशिक्षणार्थियों को देना।
- एग्रिप्रेन्यूरों में एग्रि–एन्ट्रप्रेन्यूरशिप कौशलों को बढाने के लिए रिफ्रेशर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना।

श्री ए.के. महतो
नोडल अधिकारी

नेताजी सुभास रीजिनल इन्स्टिट्यूट ऑफ कोऑपरेटिव मैनेजमेंट (एनएसआरआईसीएम)
कल्याणी पार्क, जिला नाडिया – 741235, मोबाईल : 09831950073,
ई–मेल : asishmahato@yahoo.com.in, www.nsricm.com, skyep ID: nsricmkalyani

17 से 21 नवंबर, 2014 के दौरान इंडिया–जापान बिजिनेस वुमेन फोरम टोक्यो केन्शु सेंटर (टीकेसी), जापान में महिला उद्यमी सुश्री गीताशोरी युमनाम

एच आई डी ए (विदेशी मानव संसाधन विकास एसोसिएशन) के सहयोग में कान्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री ने 17 से 21 नवंबर, 2014 के दौरान टोक्यो केन्शु सेंटर, जापान में ''भारत में महिला नेताओं का सशक्तीकरण'' पर पाँच दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। इन्स्टिट्यूट ऑफ कोऑपरेटिव मैनेजमेंट (आई सी एम) इंफाल से ए सी ए बी सी के तहत श्रीमति गीताशोरी युमनाम ने प्रशिक्षण प्राप्त किया है, और वे जैवी खाद उत्पादन और ग्रीन मैन्यूरिंग पर परामर्शी सेवा में सम्मिलित रही, वे मणिपुर के इंफाल जिले में ऑर्गानिक कृषि को बढ़ावा देने वालों में से एक है। कृषि उद्यमियों की इको–फ्रेंडली रणनीतिगत कार्य प्रणाली को ध्यान रखते हुए, कान्फेडरेशन ऑफ इंडियन इंडस्ट्री (सीआई) ने देश भर के 17 महिला भागीदारो में उन्हें भी चुना।

सुश्री गीताशोरी युमनाम

श्रीमति गीताशोरी ने कहा कि टोक्यो प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लेने उनके लिए सौभाग्य की बात है। उन्होंने कार्य संस्कृति, समय प्रबंधन, कठिन परिश्रम परिवेश, समय तथा आधुनिक तकनीक के क्षेत्रों में व्यापार के मुख्य कार्य रणनीतियों को सीखा जो अपने उद्योग की दीर्घकालिकता के लिए अत्यंत आवश्यक है। वे अपने अन्य सह–उद्यमियों से अपील करती है कि वे भी ऐसे प्रशिक्षणों में भाग लें, और कहा कि यदि हम 20 से 30 प्रतिशत जपान कार्य संस्कृति को अपनाए हैं तो बहुत उन्नति कर सकते हैं। श्रीमति गीता शोरी निम्न पते पर उपलब्ध रहेंगी: C/o गंभीर सिंह युमनाम, यूरिपॉक नोरे, मथाँग बॉजार, इंफाल, मणिपुर – 795001, मोबाईल सं. : 09612442741, ई–मेल : geeyumnam@gmail.com.

www.agriclinics.net वह पोर्टल है जो एसी तथा एबीसी योजना के बारे में सूचना प्रदान करता है। यह पोर्टल पात्रता मानदंडों, प्रशिक्षण संस्थानों, प्रशिक्षण कार्यक्रमों, सहायता कार्यों, वित्त विकल्पों तथा भावी उद्यमियों को सब्सिडी प्रदान करने के संबंध में अद्यतन जानकारी देता है।यह वेबसाइट स्थापित कृषि नव उद्यमों, लंबित परियोजनाओं, संबंधित योजनाओं के ब्यौरों से संबंधित सूचना तथा राज्य सरकारों, कृषि विश्वविद्यालयों, बैंकों, प्रशिक्षण संस्थानों तथा कृषि उद्यमियों के लिए उपयोगी अन्य सूचना भी प्रदान करती है।

एग्री क्लीनिकों तथा एग्रीबिजनेस केंद्रों के संबंध में अधिक स्पष्टीकरण के लिए कृपया इस पते पर मेल करें। indianagripreneur@manage.gov.in

''प्रत्येक कृषक द्वारा बेहतर कृषि''

"कृषिउद्यमी" श्री बी श्रीनिवास, आईएएस, महानिदेशक, द्वारा प्रकाशित

हमसे संपर्क करें:

कृषि उद्यमिता विकास केन्द्र, (सीएडी)
कृषि विस्तार प्रबंधन के राष्ट्रीय संस्थान
(मैनेज), राजेन्द्रनगर, हैदराबाद,पिन-500 030, भारत
ई मेल: indianagripreneur@manage.gov.in
वेबसाइट: www.agriclinics.net
हेल्पलाइन नं. : 1800 425 1556 (टोल फ्री)
ईमेल helplinecad@manage.gov.in

प्रमुख संपादक : श्री वी. श्रीनिवास, आईएएस
संपादक : डा. पी. चंद्रशेखर
सहायक संपादक : डा. लक्ष्मीमूर्ति
: सुश्री ज्योति सहारे
हिंदी अनुवाद : डॉ. के. श्रीवल्ली